

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार II-33

२५६ वंज २५७ २५८ ०
५५६ ॥ ३५७ ॥ ३५८ ॥ ३५९ ॥

यथा वाङ्मयं हृदयं
कंचिन्नामसि विद्यं हृदयं
उज्ज्वलं वाङ्मयं ॥ वाङ्मयं ॥
आत्मा वाङ्मयं ॥ वाङ्मयं ॥
यथा हृदयं वाङ्मयं ॥ वाङ्मयं ॥

[illegible]

मों तौं कों कों ॥

॥ कव च वृ गज घ म ङ्क क ट व ठ ग उ घ ङ ङ क क व थ ग
द घ ध ङ न क य ख रु ग व घ ङ म ॥ य न ल व ङ ष म ह क ॥ अ १ आ १ क ह २ क त २ क ष
२ क ण २ क व २ क ल २ क न २ क य २ क म २ क ण २ क व २ क ह २ क य २ क न २ क ध २ क द २
क थ २ क क २ क ण २ क ह २ क उ २ क ष २ क ट २ क ङ २ क म २ क ज २ क ङ २ क व २ क ङ
२ क घ २ क ग २ क व २ ॥ ॥ रु रु २ क स २ क ष २ क ङ २ क व २ क ल २ क न २ क य २ क

२

म २ क स २ क व २ क ह २ क ष २ क न २ क ष २ क ह २ क थ २ क उ २ क ण २ क ह २ क ङ २ क
क ह २ क ङ २ क म २ क ङ २ क ह २ क व २ क ह २ क घ २ क ङ २ क व २ ॥ ॥ व न्ध य २ व
त्ता य य २ ग र्ज २ ग र्ज २ मा ङ य २ ग र्ज २ य २ ह्य ट य २ वि ष य २ ग ङ य २ मा न य २ क पा व
य २ द न २ व न २ उ न २ ज न २ वि ष २ ह २ ह २ द ह २ य व २ ग ङ २ म द य २ जि २ ह २ व ल २ म
च ल २ क न व ना य ह ॥ हा क्ति वा न य ह स घ नि वा न य की ॥ ॥ मा व य २ रु ह य २

कश्चिदर्थश्च गूढाकमालाविलम्बनस्त्वन्वायं हं रुन्वायं आयागालवलायडं लव
माहं वं ह्नुन्वायलं पर्वगनिवाहिनाय हं ॥ नाम नानसकपागाल ॥ ॥ ३० ॥

क२हं२हो२हो२हो२कन२कन२वन२वन२गन२गन२घन२घन२द२द२ ३
वन२वन२द२द२कन२कन२मन२मन२न२न२द२द२०न२०न२
न२न२द२द२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२न२

[illegible]

देवाय हं यमाय हं कृष्णाय हं देवाय हं इन्द्राय हं रुद्राय हं सर्वसत्त्व हं धर्मवकाय हं
 धर्मधामनाय हं मन्त्राय हं नारायणाय हं कपालमालिन हं रुद्राय हं गुरुाय हं वननाथाय हं
 कृष्णाय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं
 यद्विंशत्युत्तराय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं
 मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं मन्त्राय हं

[illegible]

[illegible][illegible]

सर्वथाधि सर्वगदान्दन २ रुदय २ रुदय २ सटय २ स्फुटय २
 सर्वसिद्धिभयथ २ ॥ ६ ॥ किंयुष्टिंनकांकुनमम सर्वसत्त्वानां च
 नकांकुनगुफियनिजाहं ॥ यनिगदं यनियानहं ॥ यनियानः ७
 हं ॥ किस्वसुयनं ॥ दधुयनिसानं ॥ हारुयनिसानं ॥ विषदृष्टव
 हं ॥ विषनाहं ॥ सीमावन्धनधीवन्धनकाकूर्याम ॥ नयथा ॥

॥ डनंमारुगावस्थे ॥ रुदमसुथागिनी ॥ डसर्ववृद्धजकिनी ॥ वरुवर्धु
 नीन ॥ वरुवेवाचनी ॥ जकिनी नामा इवधुनादा नूयिनी ॥ डाडियानयुधुनी
 त्रिकामनूयि ॥ आदगधर्मकायसस्मगकायनिमोक्षकाय नयावगावाय ॥
 ॥ दंक्षणां वाहिनां यक्षणां धिष्ठिनां रुगां यनानयिनाम्भान् ॥ जकज
 किन्यान्जयस्मानादि ॥ ॥ दवल्लिगृक्षश्चश्चादिश्च न स विवृद्धविलु

१२, १६, १८, १९

स्वाहा ॥ नवदायनमस्तु स्वाहा ॥ रुजकायनमस्तु स्वाहा ॥ रुजकाः
(हानमस्तु रुज स्वाहा ॥ औ वसंधनायनमस्तु रुज स्वाहा ॥ उ वमचिग
यनमस्तु स्वाहा ॥ उ सर्वरुगल्यनमस्तु स्वाहा ॥ उ दलासिदी रुज रुज ॥
स्वाहा ॥ उ कोमानिय रुज रुज स्वाहा ॥ उ वकयमानिय रुज रुज ॥
ॐ नमस्तु कयमानिदयमस्तु वही समार्य ॥ ॥ ० ॥ ७

॥ उ नमारुगवहो रुज मस्तु यागिनी ॥ उ सर्ववृद्धाकिनी वरुवर्धु
नीन वरुवेवाचनी जाकिनी नामा रुज नादा नूयिनी ॥ उ रुयानयधुमी
निकामनूयि जादगधर्म कायसस्त्राग कायनिर्मोक्ष काय नदावगावाय ॥
ॐ दक्षिणा नां वाहिनां यक्षणां धिष्ठिनां रुगां यनानि गान् आनः जाकज
किन्या नूयसमानादि ॥ ॐ दवल्लिगृक्षरवशस्त्रासिदमस्तु विवृद्धविल

II-33

धर्मरत्न वंजाचार्य सुरत श्री महाविहार

कान्तरुसिं कनसंफयातानगतसर्वान्यादतवंगकनसकुसर्वेडम
मसवेसलानाश्चक्षुःकिपूषिंनकाववहागुपिं कनरुं रुंरुदखाहा॥

॥ उच्छिन्नमक्षरं रुंरुद ॥ ॥ उच्छिन्नमक्षरं रुंरुद ॥ ॥

वैलागहकधनधीसमाक ॥ ० ॥ ७ ॥ ० ॥ ॥ उच्छिन्नमक्षरं

॥ श्रीकान्तकायं ॥ नमावजधनाय ॥ नमः ॥ वजसत्वाय नमः ॥